

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शौखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
ان شاء الله عز وجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी
रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (مُسْتَنْزَف ج ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अब्बल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना
व बक्कीअ
व मरिफ़रत



13 शब्बालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : अमीरे अहले सुन्नत के 130 इर्शादात

सिने तबाअत : ज़िल हज़ 1444 हि., जूलाई 2023 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "अमीरे अहले सुन्नत के 130 इर्शादात"

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुक्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत के 130 इर्शादात

दुआए खलीफ़े अमीरे अहले सुन्नत : या रबबल मुस्तफ़ा ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत के 130 इर्शादात” पढ़ या सुन ले उसे आमिले सुन्नत और शरीअते मुतहहरा का पाबन्द बना और उसे बे हिसाब बख़्श दे ।

أَمِينٌ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रूह परवर है कि जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा ।

(مسلم، ص 172، حديث: 912)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

बुजुर्गों की बातें

फ़ारसी की मशहूर कहावत है : “صُحْبَتِ صَالِحٍ تُرَا صَالِحٍ كُنْتُ صُحْبَتِ” : “طَالِحٌ تُرَا طَالِحٍ كُنْتُ” (या’नी अच्छे आदमी की सोहबत तुझे अच्छा बना देगी और बुरे की सोहबत तुझे बुरा बना देगी) येह एक हकीकत है कि सोहबत चाहे अच्छी हो या बुरी अपना असर ज़रूर रखती है, लिहाज़ा जो शख़्स नेक बन्दों की सोहबत में रहता है उस का दिल नेकी की तरफ़ माइल होता है और जो बुरे लोगों की सोहबत में रहता है उस का दिल बुराई की तरफ़ माइल होता है । याद रखिये ! अल्लाह पाक के नेक बन्दों की मजलिस में बैठना, उन

का दीदार करना और उन की हिक्मत भरी बातों पर अमल करना दोनों जहां में काम्याबी का ज़रीआ है। नीज़ बुजुर्गाने दीन की ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ और उन की तहरीर भी येही असर रखती है। अगर कोई शख्स नेक बन्दों की बारगाह में हाज़िर नहीं हो सकता तो वोह उन के इर्शादात पढ़ कर भी फ़ैज़ हासिल कर सकता है। अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** का शुमार भी **अल्लाह** पाक के ऐसे बन्दों में होता है जिन की हिक्मत भरी गुफ़्तगू सुन कर न सिर्फ़ मुआशरे के बहुत से बिगड़े हुए लोगों की इस्लाह हो जाती है बल्कि वोह दूसरों की इस्लाह करने वाले भी बन जाते हैं। आइये ! मदनी मुज़ाकरों (उम्मी व खुसूसी) में बयान कर्दा मुख़लिफ़ मौजूआत पर आप के फ़रामीन पढ़िये और अपनी इस्लाह का सामान कीजिये।

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के 130 इर्शादात

﴿1﴾ एक तरफ़ की बात सुन कर राय काइम नहीं करनी चाहिये।

(17 रमज़ानुल मुबारक 1436 हि, 4 जूलाई 2015 बा'दे तरावीह)

﴿2﴾ वालिदैन अपनी हाफ़िज़ औलाद को रोज़ाना कुरआने पाक पढ़ने की तरगीब दिलाते रहें ताकि उन का हिफ़ज़े कुरआन बाक़ी रहे।

(19 रबीउल आख़िर 1436 हि. 8 फ़रवरी 2015)

﴿3﴾ तमाम हाफ़िज़े कुरआन रोज़ाना एक मन्ज़िल कुरआने पाक पढ़ने की कोशिश फ़रमाएं।

(19 रबीउल आख़िर 1436 हि. 8 फ़रवरी 2015)

﴿4﴾ बिला ज़रूरत अपना निगरान, उस्ताद या आलिम होना न बताया जाए।

(23 रबीउल आख़िर 1436 हि. 12 फ़रवरी 2015)

﴿5﴾ अगर डॉक्टर सिद्के निय्यत और इख़्लास के साथ मरीज़ का इलाज करे और उस के साथ हमदर्दी करे तो रोज़ी में बरकत भी होगी और आख़िरत में इस का सवाब भी मिलेगा।

(19 रबीउल आख़िर 1436 हि. 8 फ़रवरी 2015)

﴿6﴾ डॉक्टरों को मरीजों के शर्ई मसाइल में बिल्कुल दरख्त अन्दाजी नहीं करनी चाहिये बल्कि मुफ़्तियाने किराम की तरफ़ भेज दिया करें या दारुल इफ़ता अहले सुन्नत का नम्बर दे दें। (19 रबीउल आख़िर 1436 हि. 8 फ़रवरी 2015)

﴿7﴾ अगर किसी मरीज़ का इलाज डॉक्टर को न आता हो तो बिला शर्मों झिजक कह दें कि आप का इलाज मुझे मा'लूम नहीं, इस तरह लोगों की नज़र में आप की क़द्र बढ़ेगी। (2 जुमादल ऊला 1436 हि. 21 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿8﴾ ख़ौफ़े खुदा रखने वाले माहिर डॉक्टर या हकीम को फ़ेमिली त़बीब बनाया जाए। (10 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 27 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿9﴾ डॉक्टरों को चाहिये कि सादाते किराम और ग़रीबों की हमदर्दी के लिये माहाना बजट बनाएं और मुफ़्त इलाज व अदवियात की तरकीब करें और दुआएं लें। (10 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 27 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿10﴾ मरीजों की ता'दाद में इज़ाफ़े पर डॉक्टर अपने दिल की कैफ़ियत पर ग़ौर करे कि अपने मुसल्मान भाई की बीमारी पर मुझे खुशी तो नहीं हो रही ? अगर ऐसा हो तो इस्तिग़फ़ार करे।

(10 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 27 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿11﴾ ओपरेशन करने और करवाने में ऐसा वक़्त रखना चाहिये जिस में कोई नमाज़ का वक़्त न आता हो। (19 रबीउल आख़िर 1436 हि. 8 फ़रवरी 2015)

﴿12﴾ “दुरूदे तुनज्जीना” हाजतों के पूरा होने के लिये मुजर्रब है।

(19 रबीउल आख़िर 1436 हि. 8 फ़रवरी 2015)

﴿13﴾ अख़बार और मीडिया वालों को इस्लाम से नफ़्त दिलाने वाला कोई काम नहीं करना चाहिये। (19 रबीउल आख़िर 1436 हि. 8 फ़रवरी 2015)

﴿14﴾ बे जा ज़ब्हातियत (इन्सान को) फंसा देती है।

(18 रबीउल आख़िर 1436 हि. 7 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿15﴾ समझाने वाले पर गुस्सा नहीं करना चाहिये वरना आप अपने ऊपर इस्लाह का दरवाजा बन्द कर देंगे। (23 रबीउल आखिर 1436 हि. 12 फ़रवरी 2015)

﴿16﴾ सिर्फ़ दर्से निजामी के निसाब से आलिमे दीन बनना मुश्किल है, इस के लिये मज़ीद इस्लामी कुतुब का मुतालाआ ज़रूरी है।

(23 रबीउल आखिर 1436 हि. 12 फ़रवरी 2015)

﴿17﴾ अपने मुंह से अपने लिये बड़ाई के अल्फ़ाज़ न बोले जाएं।

(23 रबीउल आखिर 1436 हि. 12 फ़रवरी 2015)

﴿18﴾ अक्ल मन्द आखिरत को तरजीह देता है और इस की बरकात दुनिया में भी पाता है।

(24 रबीउल आखिर 1436 हि. 13 फ़रवरी 2015)

﴿19﴾ ख़ामोशी वोह अच्छी है जो ग़फ़लत भरी न हो।

(10 शव्वाल 1436 मुताबिक़ 26 जूलाई 2015)

﴿20﴾ बुरी सोहबत, ईमान के लिये ज़हरे कातिल है।

(25 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 12 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿21﴾ कम गो और नीची नज़र रखने वाले सुन्नतों के पैकर इस्लामी भाई मुझे अच्छे लगते हैं।

(24 रबीउल आखिर 1436 हि. 13 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿22﴾ बच्चों की जितनी फ़रमाइशें पूरी करेंगे उतनी बढ़ती जाएंगी, शुरूअ ही से कन्ट्रोल करना चाहिये।

(24 रबीउल आखिर 1436 हि. 13 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿23﴾ जो काम नरमी से होता है वोह गरमी से नहीं होता।

(24 रबीउल आखिर 1436 हि. 13 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿24﴾ आप चाहे जितने बड़े निगरान हों मगर अपने मा तहूत से नरमी व महब्बत से काम लें।

(24 रबीउल आखिर 1436 हि. 13 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿25﴾ इस तसव्वुर को अपने दिलो दिमाग़ में जमाइये कि **अल्लाह** मुझे देख रहा है।

(25 रबीउल आखिर 1436 हि. 16 फ़रवरी 2015)

﴿26﴾ सन्जीदगी अपनाइये मगर याद रखिये ! मुस्कुराना सन्जीदगी के ख़िलाफ़ नहीं । (फ़र्स्ट जुमादल ऊला 1436 हि. 20 फ़रवरी 2015)

﴿27﴾ एक गुनाहे सगीरा भी जहन्नम में जाने का सबब बन सकता है । (फ़र्स्ट जुमादल ऊला 1436 हि. 20 फ़रवरी 2015)

﴿28﴾ मा तहूत से ग़लती हो जाने पर झाड़ने, डांटने के बजाए प्यार महब्बत से समझाएं । (फ़र्स्ट जुमादल ऊला 1436 हि. 20 फ़रवरी 2015)

﴿29﴾ बच्चों को “टाटा” न सिखाइये बल्कि फ़ी अमानिल्लाह, खुदा हाफ़िज़ या **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ** याद करवाइये । (फ़र्स्ट जुमादल ऊला 1436 हि. 20 फ़रवरी 2015)

﴿30﴾ जो चीज़ बुजुर्गों से मन्सूब हो जाए उस का अदब करना कारे सवाब (सवाब का काम) है । (फ़र्स्ट जुमादल ऊला 1436 हि. 20 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿31﴾ इल्मे दीन हासिल करना अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने से अफ़ज़ल है । (7 जुमादल ऊला 1436 हि. 26 फ़रवरी 2015)

﴿32﴾ लोग ऐसे शख्स से दूर भागते हैं जो ज़बान दराज़ हो, बद अख़्लाक हो, कपड़े साफ़ न रखता हो लेनदेन के मुआमलात दुरुस्त न हों मसलन उधार वापस न करता हो, उस के जिस्म या कपड़ों से बदबू आती हो वग़ैरा वग़ैरा । (23 शव्वाल 1436 मुताबिक़, 18 अगस्त 2015)

﴿33﴾ अमलिय्यात का शो'बा बहुत नाजुक है, इस में हुब्बे जाह (शोहरत व मर्तबे की महब्बत) से बचना बहुत मुश्किल है । (7 जुमादल ऊला 1436 हि. 26 फ़रवरी 2015 खुसूसी)

﴿34﴾ मुतालआ इल्मे दीन की जान है । (8 जुमादल ऊला 1436 हि. 27 फ़रवरी 2015)

﴿35﴾ बच्चों को बचपन से जेब ख़र्ची देना शुरूअ न करें, घर में ही खाने की चीज़ें बना कर दिया करें । (9 जुमादल ऊला 1436 हि. 28 फ़रवरी 2015)

﴿36﴾ बिगाड़ आसान है, मगर सुधार मुश्किल है, इमारत बनाने में बा'ज अवकात सालों लग जाते हैं मगर गिराने में बहुत कम वक़्त लगता है ।

(13 ज़िल का'दह 1436 मुताबिक 29 अगस्त 2015)

﴿37﴾ मसाजिद में बे आवाज़ (Sound Proof) जनरेटर लगाने की तरकीब बनाई जाए, वोह पेट्रोल पर चले या गेस पर, उस की बदबू मस्जिद में नहीं आनी चाहिये ।

(20 ज़िल का'दह 1436 मुताबिक 5 सितम्बर 2015)

﴿38﴾ बिगैर मिटे काम नहीं होगा कि दाना खाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है ।

(10 जुमादल ऊला 1436 हि. फ़र्स्ट मार्च 2015)

﴿39﴾ अपनी गुफ्तगू पर गौरो फ़िक्र किया करें कि मैं ने क्या और क्यूं बोला ?

(11 जुमादल ऊला 1436 हि. 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿40﴾ ऐसा बोलें कि सामने वाले को आप के मज़ीद बोलने की ख़्वाहिश हो ।

(11 जुमादल ऊला 1436 हि. 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿41﴾ सन्जीदा और बा अख़्लाक़ शख़्स की बात हर कोई मानता है ।

(11 जुमादल ऊला 1436 हि. 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿42﴾ किरदार की नेकी की दा'वत गुफ्तार की नेकी की दा'वत से ज़ियादा मुतअस्सिर कुन है ।

(12 जुमादल ऊला 1436 हि. 3 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿43﴾ किसी शहर में कोई वबा फैल जाए तो आबादी के बाहर अज़ानें दी जाएं और सदक़ा व ख़ैरात की कसरत की जाए ।

(23 जुमादल ऊला 1436 हि. 14 मार्च 2015)

﴿44﴾ हमें शरीअत पर अमल करने के लिये ह़स्सास तबीअत बनानी होगी ।

(15 जुमादल उख़्रा 1436 हि. 4 एप्रिल 2015)

﴿45﴾ हज़ारों अच्छे काम, सवाब की निय्यत न करने की वजह से महज़

मुबाह होते हैं। (या'नी वोह कारे सवाब नहीं बनते)

(15 जुमादल उख़ा 1436 हि. 4 एप्रिल 2015)

﴿46﴾ नमाज़ से पहले वोह तमाम चीज़ें जो खुशूअ से मानेअ (या'नी रुकावट) हों, उन्हें दूर करें। (15 जुमादल उख़ा 1436 हि. 4 एप्रिल 2015)

﴿47﴾ दुरूद शरीफ़ आ'माल को पाक करने वाला है।

(फ़र्स्ट ज़िल हिज्जा 1436 मुताबिक़ 15 सितम्बर 2015)

﴿48﴾ नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत के लिये इब्तिदाअन बिलजब्र नफ़्स को नेकियों की तरफ़ गामज़न करना पड़ता है।

(29 जुमादल उख़ा 1436 हि. 18 एप्रिल 2015)

﴿49﴾ एम्ब्यूलन्स की आवाज़ अपने अन्दर इब्रत रखती है।

(29 जुमादल उख़ा 1436 हि. 18 एप्रिल 2015)

﴿50﴾ अपने घर में दो चार जगह “अल्लाह देख रहा है” लिख कर लगा दें। इस की बरकतें खुद देख लेंगे। (29 जुमादल उख़ा 1436 हि. 18 एप्रिल 2015)

﴿51﴾ औलाद को नेक बनाने का ज़ब्बा अच्छा है, मगर इस के लिये बे जा ज़ब्बाती होना दुरुस्त नहीं। (17 रमज़ानुल मुबारक 1436, 5 जूलाई 2015 बा'दे अ़स्)

﴿52﴾ मां बाप को चाहिये कि वोह बच्चों को प्यार और हिक़मते अ़मली से समझाएं, बात बात पर झाड़ना, मारना और चीख़ चीख़ कर समझाना उन्हें बागी बना सकता है। (13 रजब 1436 ब मुताबिक़ 2 मई 2015)

﴿53﴾ बच्चों से झूट बोलने वाले बुरे लोग हैं, इन में सितारए हमाक़त तक्सीम करना चाहिये कि वोह अपने हाथों से बच्चों के अख़्लाक़ तबाह करते हैं। (13 रजब 1436 ब मुताबिक़ 2 मई 2015)

﴿54﴾ बच्चों को डराना कि “बाउ आ गया, जिन्न खा जाएगा, फ़कीर उठा

कर ले जाएगा, बोरी वाला पकड़ लेगा” वगैरा जुम्ले बोलने से वोह बुज़दिल हो जाएंगे। बच्चों को बुज़ या’नी बकरी के दिल वाला नहीं बल्कि शेरदिल (बहादुर) बनाना है। (13 रजब 1436 ब मुताबिक 2 मई 2015)

﴿55﴾ थकन और भूक में ग़म की ख़बर पर सदमा ज़ियादा होता है। इस हालत में किसी की वफ़ात की ख़बर देने से इज्तिनाब किया जाए।

(13 रजब 1436 ब मुताबिक 2 मई 2015)

﴿56﴾ मुबल्लिग़ के लिये इल्म, तहम्मूल व बरदाश्त, नरमी और हिक़मते अमली ज़रूरी है।

(20 रजब 1436 ब मुताबिक 9 मई 2015)

﴿57﴾ क़लम, इल्म सीखने का आला है, इस का अदब किया जाए।

(20 रजब 1436 ब मुताबिक 9 मई 2015)

﴿58﴾ मश्वरा मश्वरा ही होता है, ओर्डर नहीं। इस लिये कोई क़बूल न करे तो नाराज़ नहीं होना चाहिये।

(27 रजब 1436 ब मुताबिक 16 मई 2015)

﴿59﴾ दिल ज़िक़्रे इलाही से गाफ़िल न हो, इस के लिये सोहबते सालेह (नेकों की सोहबत) ज़रूरी है।

(10 शव्वाल 1436 मुताबिक 26 जूलाई 2015)

﴿60﴾ जो अपने “इख़्लास” पर मुत्मइन हो जाए, उसे इख़्लास की ज़ियादा ज़रूरत है।

(5 शा’बान 1436 ब मुताबिक 23 मई 2015)

﴿61﴾ मसाजिद अमन और नुजूले रहमत की जगहें हैं।

(12 शा’बान 1436 ब मुताबिक 30 मई 2015)

﴿62﴾ मेहमान का शौक़ से खाना खाना, मेज़बान को खुश करता है कि मेरा खाना मेहमान को पसन्द आया है।

(17 शा’बान 1436 ब मुताबिक 4 जून 2015)

﴿63﴾ बिन बुलाए किसी की दा’वत में हरगिज़ नहीं जाना चाहिये, अगर कभी ऐसा हुवा हो तो तौबा के साथ साथ साहिबे ख़ाना से मुआफ़ भी करा लें।

(19 शा’बान 1436 ब मुताबिक 6 जून 2015)

- ﴿64﴾ आज कल लोगों की हिंस देख कर लगता है कि खुददारी फ़ौत हो चुकी है । (19 शा'बान 1436 ब मुताबिक 6 जून 2015)
- ﴿65﴾ जब अज़ान हो जाए तो सब कामकाज छोड़ कर नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाया करें । (26 शा'बान 1436 ब मुताबिक 13 जून 2015)
- ﴿66﴾ नमाज़ से न बोलो कि मुझे काम है बल्कि काम से कहो मुझे नमाज़ पढ़नी है । (26 शा'बान 1436 ब मुताबिक 13 जून 2015)
- ﴿67﴾ हराम के खिलाफ़ ए'लाने जंग है "न हराम खाएंगे न अपने बच्चों को खिलाएंगे ।" (26 शा'बान 1436 ब मुताबिक 13 जून 2015)
- ﴿68﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! दुनिया में तो हम मोमिन हैं, अगर ईमान की हालत में मरें तो येह बहुत बड़ी सआदत है । (27 शा'बान 1436 ब मुताबिक 14 जून 2015)
- ﴿69﴾ नेक काम करने के लिये नफ़्स को मारें और ब तकल्लुफ़ नेक काम करने की कोशिश करें । (27 शा'बान 1436 ब मुताबिक 14 जून 2015)
- ﴿70﴾ मदीने शरीफ़ में फ़ौत होना सआदत की बात है । (28 शा'बान 1436 ब मुताबिक 15 जून 2015)
- ﴿71﴾ बच्चों की भी दिलजूई की जाए । (28 शा'बान 1436 ब मुताबिक 15 जून 2015)
- ﴿72﴾ अगर हम अपनी ज़ात से किसी को खुश नहीं कर सकते तो किसी का दिल भी न दुखाएं । (28 शा'बान 1436 ब मुताबिक 15 जून 2015)
- ﴿73﴾ काश ! हम चेहरा चमकाने के बजाए अपना दिल चमकाने की कोशिश में मशगूल हो जाएं । (11 मुहर्रम 1437 हि. मुताबिक 21 अक्तूबर 2015)
- ﴿74﴾ आप बूढ़े हों या जवान, हर उम्र में इस्लाम की ख़िदमत की कोशिश करें । (2 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 19 जून 2015 बा'दे ज़ोहर)

﴿75﴾ सहरी में हलकी गिज़ा और वोह भी कम खाएं, सकील (भारी) गिज़ाएं न खाएं, सिद्दहत बेहतर रहेगी ।

(3 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 20 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿76﴾ छालिया का कसरत से इस्ति'माल नुक़सान देह है ।

(7 ज़िल हिज्जा 1436 मुताबिक 21 सितम्बर 2015)

﴿77﴾ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये कम खाना इबादत है ।

(3 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 20 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿78﴾ अपने बच्चों और बच्चियों को इस्लामी मा'लूमात पर मुश्तमिल सुवालात और उन के जवाबात याद करवाएं ।

(20 जुमादल ऊला 1438 हि. 18 फ़रवरी 2017 ई.)

﴿79﴾ किसी ने कोई किताब अमानत के तौर पर दी हो तो उस की इजाज़त के बिग़ैर खोल कर न देखें । (3 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 20 जून 2015 बा'दे अस्)

﴿80﴾ दौराने अज़ान कई बार मेरा येह तसव्वुर बंध जाता है कि गोया मैं क़ब्र में हूं और मेरी क़ब्र पर अज़ान हो रही है ।

(4 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 21 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿81﴾ टूटी फूटी क़ब्रें देखने से इब्रत हासिल होती है ।

(फ़र्स्ट मुह्रर्म 1437 मुताबिक 15 अक्टूबर 2015)

﴿82﴾ दौराने फ़ोन, लाउड स्पीकर खोलना हो तो मुख़ातब से इजाज़त ले लें, शायद वोह ऐसी बात करना चाहता हो जो आप के इलावा किसी और को पता न चले ।

(5 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 22 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿83﴾ फ़ोन में कौल रेकोर्डिंग सिस्टम में इब्रत है कि हम रेकोर्डिंग में संभल संभल कर बात करते हैं, मगर किरामन कातिबीन जो कि हर वक़्त हमारे साथ हैं, उन से नहीं डरते । (5 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 22 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿84﴾ मेरी आदत है कि मैं बे हिसाब मग़िफ़रत की दुआ करता करवाता हूँ, क्यूं कि मैं अपने अन्दर हिसाब की ताब नहीं पाता ।

(5 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 22 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿85﴾ महज़ सुस्ती की बिना पर बे जमाअत नमाज़ पढ़ना मेरी डिक्शनरी में नहीं ।

(5 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 22 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿86﴾ जिस का दिल दीनी माहोल में घबराता है उस की मिसाल ऐसी ही है जैसे मरीज़ को दवा अच्छी नहीं लगती ।

(फ़र्स्ट रबीउल अब्वल 1437 हि. 13 दिसम्बर 2015 ई.)

﴿87﴾ जिस की इमामा शरीफ़ बांधने की निय्यत हो तो फ़ौरन इमामा बांध ले, जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं ।

(5 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 22 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿88﴾ सलीका मन्द औलाद, अपने वालिदैन के सामने बुलन्द आवाज़ से बात नहीं करती बल्कि उन का अदब करती, हाथ पाउं चूमती है ।

(6 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 23 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿89﴾ अ़ल्लिमे दीन का एहतिराम करना मुस्तहब है ।

(6 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 23 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿90﴾ इबादत में दिलतंग होना अच्छी बात नहीं ।

(6 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 23 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿91﴾ दुन्यवी मसरूफ़ियत इस तरह नहीं होनी चाहिये कि अल्लाह पाक की इबादत और दीगर फ़राइज़ में कोताही हो ।

(6 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 24 जून 2015 बा'दे अ़स्र)

﴿92﴾ दवा से पहले بِسْمِ اللّٰهِ الشّٰفِي بِسْمِ اللّٰهِ الْكَافِي पढ़ने की आदत बनाइये, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ الْكَرِيْم शिफ़ा होगी । (7 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 25 जून 2015 बा'दे अ़स्र)

﴿93﴾ जो सिद्दहत मन्द रहना चाहता है, वोह जवानी से ही इबादत पर कुव्वत हासिल करने की निय्यत से जि़यादा खाने पीने से परहेज़ करे ।

(9 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 26 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿94﴾ जहां तक हो सके दवा (Medicine) से बचिये और इलाज बिल ग़िज़ा की कोशिश कीजिये । (10 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 27 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿95﴾ अपनी ग़लती को मानने के लिये अना (मैं) को फ़ना करना होगा ।

(11 जुमादल ऊला 1436 हि. 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿96﴾ उस्ताज़ को अपने तुलबा की नफ़िसयात परख्ना आना चाहिये ।

(11 जुमादल ऊला 1436 हि. 2 मार्च 2015 खुसूसी)

﴿97﴾ मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत करते रहेंगे तो ऐसे ऐसे मसाइल मा'लूम होंगे, जो पहले मा'लूम न थे । (9 ज़िल हिज्जा 1436 मुताबिक़ 23 सितम्बर 2015)

﴿98﴾ हर लिखने वाले को **अल्लाह** पाक से डरना चाहिये कि वोह क्या लिख रहा है ।

(12 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 29 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿99﴾ शादी में इतना खाना पकवाएं कि जो मुकम्मल खाया जा सके और जाएअ़ न हो, क़ियामत को ज़रें ज़रें का हि़साब होगा ।

(12 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 29 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿100﴾ अख़्बारात में मुक़द्दस अल्फ़ाज़ भी लिखे होते हैं, लिहाज़ा इन को न फेंकिये ।

(12 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 29 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿101﴾ कोई भी शर्इ मस्अला या तह़रीर उस वक़्त तक अ़ाम न करें जब तक किसी मुस्तनद मो'तबर अ़ालिमे दीन से चेक न करवा लें ।

(12 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 29 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿102﴾ दीन का जितना काम करना है जवानी में कर लें, उ़मूमन बुढ़ापे में हि़म्मत साथ नहीं देती । (13 रमज़ान 1436 ब मुताबिक़ 30 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿103﴾ अपनी राहत के साथ दूसरों की राहत का भी खयाल रखना चाहिये ।
(13 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 30 जून 2015 बा'दे इशा)

﴿104﴾ हत्तल इम्कान हवाई जहाज़ का सफ़र करना हो तो ऐसा वक़्त (Time) मुन्तख़ब कीजिये कि दौराने सफ़र कोई नमाज़ न पढ़नी पड़े, क्यूं कि जहाज़ में नमाज़ पढ़ने में दुश्वारी होती है ।

(13 रमज़ान 1436 ब मुताबिक फ़र्स्ट जूलाई 2015 बा'दे अ़स्)

﴿105﴾ जो ना बालिग़ बच्चे बरदाशत कर सकते हों तो उन्हें रोज़े रखवाए जाएं ।
(13 रमज़ान 1436 ब मुताबिक फ़र्स्ट जूलाई 2015 बा'दे अ़स्)

﴿106﴾ नेकी के फ़ज़ाइल पर नज़र करने और उम्र की कमी में गौर करने से नेकियों में मुस्तक़िल मिज़ाजी हासिल होगी ।

(14 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 2 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿107﴾ घर का कोई नाम रखना अच्छी बात है, मैं जिस घर में रहता हूं उस का नाम “बैतुल फ़ना” रखा है कि हर चीज़ के लिये फ़ना है ।

(14 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 2 जूलाई 2015 बा'दे अ़स्)

﴿108﴾ मस्जिद अल्लाह पाक की रहमत के नुज़ूल की जगह है, इस से दिल लगाइये और यहां वक़्त गुज़ारिये । (4 मुहर्म्म 1437 मुताबिक 18 अक्टूबर 2015)

﴿109﴾ इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने वाला या इस्लाम के ख़िलाफ़ बातें करने वाला शैतान है ।
(15 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 3 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿110﴾ नफ़िसयाती ख़ौफ़ नहीं होना चाहिये बल्कि अपने अन्दर हकीकी ख़ौफ़े खुदा पैदा कीजिये । (15 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 3 जूलाई 2015 बा'दे अ़स्)

﴿111﴾ येह कहना दुरुस्त नहीं कि मैं “फ़ुल परहेज़ी” करता हूं, क्यूं कि कुछ न कुछ बद परहेज़ी तो हो ही जाती है ।

(16 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 3 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿112﴾ जिस को देख कर कुरआन पढ़ना नहीं आता वोह पढ़ा लिखा नहीं हो सकता, अगर्चे लोग कहते रहें। (16 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 3 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿113﴾ इल्मे दीन हासिल करना, उस पर अमल करना और उस की इशाअत करना सब सदका है। (16 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 3 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿114﴾ रमज़ानुल मुबारक नेकियां करने वालों और जन्नत में जाने वालों का सीज़न (Season) है। (16 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 4 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿115﴾ किसी के बुलाने पर जवाब में "लब्बैक" कहना प्यारा और नर्म जुम्ला है। इस के कहने से महबूबत बढ़ती है, येह सुन्नत भी है, इस निय्यत से कहेंगे तो सवाब मिलेगा। (16 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 4 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿116﴾ अपनी औलाद को भी बिना ज़रूरत झाड़ने और दिल आज़ारी की इजाज़त नहीं। नर्म लहजे से समझा कर औलाद से काम लेना चाहिये।

(17 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 5 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿117﴾ अपनी कोई भी तहरीर, मुस्तनद अल्लिम से तस्दीक़ करवाए बिगैर आगे न भेजें। (10 मुहर्मुल ह्राम, 1437 मुताबिक 21 अक्टूबर 2015)

﴿118﴾ वस्वसों की तरफ़ तवज्जोह न देना भी वस्वसों का इलाज है।

(18 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 5 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿119﴾ अपने फ़ौत शुदगान को ख़्वाब में देखने की जिद्दो जहद न की जाए, अगर किसी ना पसन्दीदा हाल में देख लिया तो तवील सदमा होगा, अगर्चे ख़्वाब शर्अन हुज्जत नहीं। (19 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 7 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿120﴾ ख़ौफ़े खुदा के हुसूल के लिये ख़ाइफ़ीन (अल्लाह पाक से डरने वालों) की सोहबत बहुत ज़रूरी है। (20 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 7 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿121﴾ ईदुल फ़ि़त्र यौमे तशक्कुर है, हमें इस में गुनाहों से बचते हुए अल्लाह पाक का शुक्र अदा करना चाहिये। (21 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 8 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿122﴾ अपने बच्चों के सामने इस निय्यत से **अल्लाह अल्लाह** किया करें कि वोह भी **अल्लाह अल्लाह** करने वाले बन जाएं ।

(14 जुमादल ऊला 1438 हि. 11 फ़रवरी 2017 ई.)

﴿123﴾ बच्चे को कुन्द ज़ेहन या पढ़ाई में कमज़ोर वगैरा कहना, उसे मज़ीद कुन्द ज़ेहन बना सकता है । इस लिये ऐसा कहने से इज्तिनाब कीजिये ।

(22 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 10 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿124﴾ नफ़ासत पसन्दी का तकाज़ा येह है कि पियाला या गिलास वगैरा इस तरह उठाया जाए कि अंगूठा अन्दर बल्कि किनारे पर भी न आए, पैदे की जानिब से उठाइये । (23 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 10 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿125﴾ मरने के बा'द हर एक तमन्ना करेगा कि काश ! एक पैसा भी बचा कर न रखता बल्कि ख़ैरात कर देता ।

(23 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 11 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿126﴾ दुन्या की तकलीफ़ों में जहन्नम की तकलीफ़ों की याद है ।

(24 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 11 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿127﴾ जितना हो सके मुसीबत को छुपाना चाहिये ।

(24 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 11 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿128﴾ मर्द वोह नहीं जो मुआशरे के पीछे चले बल्कि मर्द वोह है जो मुआशरे को अपने पीछे चलाए । (24 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 12 जूलाई 2015 बा'दे अस्)

﴿129﴾ अपने अन्दर ख़ौफ़े खुदा पैदा करने के लिये अपने आप को बेबस समझें और **अल्लाह** की ग़ालिब कुदरत को याद कीजिये । **अल्लाह** पाक की खुफ़्या तदबीर और बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से डरते रहिये ।

(25 रमज़ान 1436 ब मुताबिक 12 जूलाई 2015 बा'दे इशा)

﴿130﴾ अपने घर में कन्जुल ईमान ज़रूर रखिये ।

(8 ज़िल हिज्जा 1436 मुताबिक 22 सितम्बर 2015)